प्रकाशनार्थ

कथा।

29 सितंबर, गोरखपुर।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन व्यासपीठ से कथाव्यास वृंदावन मथुरा से पधारे भागवत भास्कर श्री कृष्णचंद्र शास्त्री "ठाकुर जी" ने कहा कि सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है , इस धर्म के चार स्तंभ है हिंदू ,जैन बौद्ध और सिख , इन चारों संप्रदायों में कोई वास्तविक भेद नहीं है। यह सब सनातन संस्कृति को मानने वाले हैं । भगवान बुद्ध हो, भगवान महावीर हो या गुरु नानक देव हो सभी भगवान विष्णु ही है । सब उन्हीं की भक्ति करते हैं । दुनिया के सभी पापों का सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित यदि कोई है तो वह है भगवान की भक्ति । भगवान की कृपा से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जीव की जितनी क्षमता पाप करने की है, उससे अनंत गुना क्षमता भगवान के नाम में पाप को नष्ट करने की है। भगवान के नाम की महिमा ईतनी है कि जीवन भर पाप करने वाला अजामिल मृत्यु समीप होने पर भगवान के नाम वाले अपने पुत्र को बुलाया जैसे ही उसने नारायण का नाम लिया उसके लिए बैकुंठ का द्वार खुल जाता है।

भारतीय संस्कृति में नारी महिमा बताते हुए कहते हैं कि हमारे शास्त्रों में विवाह के बाद पत्नी का त्याग करना सबसे बड़ा जघन्य अपराध है। सनातन धर्म में तलाक नाम की कोई चीज नहीं है। यहां तो पति-पत्नी का साथ सात जन्मों का संबंध होता है । भगवान मनु ने कहा है कि जिस घर में नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं और जहां इनका अपमान होता है वहां सभी क्रियाएं निष्फल हो जाती है। साधु शब्द की व्याख्या बताते हुए बताया कि जो सभी बिगड़े लोगों को सुधार देता है वही साधू होता है। हमारे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री साधु है इसलिए वे प्रदेश के दुष्टों को सुधारने का कार्य कर रहे हैं। भारतवर्ष की संपूर्ण भूमि तीर्थ क्षेत्र है जन्म जन्मांतर का पुण्य उदय होने पर यहां जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।उसमें भी अयोध्या

धाम तथा मथुरा वृंदावन धाम का तो कण कण तीर्थ है । कथा व्यास ने कहा कि हमें अपने बच्चों का नाम भगवान के नाम से मिलता-जुलता रखना चाहिए, उसके बहाने जाने-अनजाने में हम भगवत-नाम का संकीर्तन करते रहेंगे। हम संकेत में नाम लें अथवा पुकार कर नाम लें, काम तो करेगा ही। भगवान का किसी भी प्रकार से नाम लेंगे, भगवान जरुर सुनते हैं। भगवान राम का वर्णन करते हुए कथा व्यास जी ने बताया कि जहां योगी जन का मन रमण करता है वहीं राम हैं। राम इस भारत की आत्मा हैं। यह इक्कीसवीं सदी सनातन धर्म का समय है। यह भगवान राम के भक्तों का समय है। भगवान राम की कथा सुने बिना, भगवान कृष्ण की कथा नहीं सुनते। इसलिए भागवत में पहले संक्षेप में राम कथा सुनाकर शुकदेव जी राजा परीक्षित को भगवान श्री कृष्ण की कथा में प्रवेश कराते हैं। राजा परीक्षित जैसा श्रोता दुर्लभ है जो चौबीसों घंटे बिना रुके भगवान के कथामृत का पान करते हैं।

उन्होंने "मन रे कृष्ण नाम कह लीजै, बांके बिहारी जप लीजै", भजन गाकर श्रोताओं का मन मोह लिया।

पृथ्वी जब पाप के भार से दब रही थी तो, गाय के रूप में ब्रह्मा जी के पास जाकर कहती हैं कि अब आप कुछ करें, मैं यह भार नहीं सह सकती। तब ब्रह्मा जी ने परमात्मा का ध्यान किया और बताया कि मथुरा में भगवान जन्म लेंगे। भगवान मथुरा में जन्म लेते हैं और पिता वासुदेव जी उनको गोकुल पहुंचा देते हैं। गोकुल में भगवान का जन्मोत्सव मनाया जाता है।

कथा व्यास के, "नंद जी के आंगन में बज रही आज बधाई", इस बधाई गीत से श्रोता झूम उठे।